दादाजी वक्तव्य

स्व.महाराजाधिराज श्री सवाई मानसिंहजी को श्रद्धान्जलि

–राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा

।।श्रीः।।
'यतो धर्मस्ततो जयः'।

श्री जयपुर नरेश स्वर्गीय महाराजाधिराज श्री 108 श्री सवाई मानसिंहजी बहादुर की दशम पुण्यतिथि पर समर्पित –

श्रद्धांजलिः।
आसीत्यः कुशवंशमौलिमुकुटो मूर्धाऽभिषिक्तो नृपः
राज्यं येन कृतं सुचारु–विधिना 'ढूण्ढार' देशस्य वै।
'माधोसिंह'–सुतः सुधार्मिकमतिः वीराग्रणी मानवः
हा, हा, हन्त दिवंगतो दिनमणिः 'श्रीमानसिंहः' प्रभुः ।।1।।

क्रीडासुप्रथितं यतो हिरमणं रामोअस्ति रम्योअन्तगः
योगस्तस्य च खेलनेअत्र भविता रामेण पोलो मखे।
इत्यालोच्य व्रतं परं सुविहितं क्रीड़ाद्विरामो न वै
पोलोप्रांगण एव हा दिवमगात् रामे रमन्भूभुजः ।।2।।

पोलोक्रीडनकौशलेन विजितं विश्वं समस्तं यदा
लोकानां हृदयेषु स्नेहसुपदं राज्ये प्रतिष्ठापितम्।
राजस्थान–सुप्रान्तपालनपरो यो राज्यपालोऽभवत्
हा, हा, हन्त, कुतो गतः स महितो, शून्येऽपि नो दृश्यते ।।3।।

श्रीमत्कथाभट्टकृष्णचन्द्र कुमारकोअहं जगदीशचन्द्रः।
श्रीमाधवेशस्य सुतं सु–मानं श्रद्धांजलिः साऽश्रु समर्पयामह ।।4 ।।

श्री निरंजन नाथ आचार्य के निधन पर उद्बोधन

–राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा

आज परम शोक का अवसर है कि हमारे बीच से हमारा रहबर, नेता, प्रधान, महासभा का सभापति किसी ने बलात् हमसे छीन लिया और हजारों लाखों की संख्या में अनुगामी होते हुए हम, छीनने वाले का पता भी न पूछ पाए। अंजन आँजने वाले आज भी मौजूद हैं और किन्तु जैसे निरंजन लोगों का स्वामी, नाथ उठ गया हो। निरंजन नाथ ने देह को ऐसे पहिना जैसे भतत उदयगिरेरिवैक एवं स्फुरित गुणद्युतिसुन्दरः कलावान् ।

इह जगति महोत्सवस्य हेतु–
र्नयनवतामुदियाय बालचन्द्रः।।
इस प्रकार धीर शान्त नायक जो–
भविनयादिनेत् सामान्यगुणयोगी धीरशान्तो द्विजादिकः,
इति विप्रवणिक सचिवादीनां प्रकरण नेतृणामुपलक्षणम्।
निरञ्जनेन यो देहो धृतो लोकस्य रक्षणे।
कर्मणः पूर्तये पश्चात् त्यक्त्वा देहं स निर्गतः।।
उस धीरशान्त नायक, नेता का क्या हुआ जैसे
भमखशतपरिपूतं गोत्रमुद्भासितं यत्
सदसि निबिउचैत्यब्रह्मघोषैः पुरस्तात्।
मम निधनदशायां वर्तमानस्य पापै
स्तद सदृशमनुष्यैर्घुष्यते घोषणायाम्
ऐसे मानव–

आहूत स्याभिषेकाष विस्टष्टस्य वनाय च ।

न मयालक्षितस्तस्य स्वल्पोप्याकार विभ्रमः ।

शिशमुखैः स्पन्दत एव रक्तमघापि

देहे मम मांसमस्ति तृप्तिं न पश्यामि तवैव तावत्।

किं भक्षणात् त्वं विरतो गरुत्मन्।।

विद्याधरराजपुत्रजीमूतवाहनेः–

कहा हैः–

त्वचं कर्णः शिबिर्मांसं जीवं जीमूतवाहनः ।

ददौ दधीचिरस्थीनि, नास्त्यदेयं महात्मनाम्।।

जैसे पिप्पलाद के निवास स्थान पीपली में आचार्य विद्वान् धन्वन्तरि के यहाँ जन्म लेकर क्या गाँव व जाति आदि का भेदभाव भुलाकर गले से मिलने वाली स्नेहमूर्ति चली गई । मेरा निजी 40 वर्षों से उनका सम्पर्क था । मेवाड़ में उनने अपनी वकालत का झंडा लहराया । आपने महा राजस्थान में संसद बनने के बाद विधायक व अध्यक्ष विधानसभा का पद सुशोभित किया ।

हँसमुख आपकी मुद्रा, व्यङ्ग्य या श्लिष्टवाणी साहित्यकों के हृदय को बेधती थी, कैसा उत्तम साहित्य व अनुभवों का प्रकाश आप कलम में रखते थे कि पढ़ने वाला हृदय से आवर्जित हो जाता। आज, दाहिमा ब्राह्मणों ने देश की सेवा में रत अपना सेनानी खो दिया जिसका स्थान अपूर्ण है।

अतः आज इष्ट का नाश हो गया। 6 अप्रेल की इस निधन–तिथि ने हम लोगों से छल किया और हमारे इष्ट नेता व सभापति अ.भा. दाधीच (दाहिमा) ब्राह्मण सभा को अनाथ करके हम सब को शोकाभिभूत करके करूण रस में डुबो गए । शोकात्मा – विश्वास, उच्छ्श्वास, रुदित, स्तम्भ, प्रलापित आदि की अवस्था में लीन हैं कि कर्त्तव्य विमूढ हैं । उसी दिन रात को चिता के सामने बैठे मंत्री ने प्रज्वलित, हव्यवाट् में स्थित हिरण्यगर्भ से पूछा कि–

अब ये मंत्री क्या करेगा?जिसका था उसी सभापति की आज्ञा पालन करना धर्म था उससे ये उत्रृण कैसे होगा । बताओ स्वर्ण पुरूष निरञ्जन आत्मस्वरूप नाथ आत्म–स्वामी । ज्योति की लौ भरभराकर उठी प्रकाश अपूर्व हुआ – मूक भाषा में आज्ञा थी कि लकड़ी स्वयं को जलाकर अन्य वस्तु को साथ जलाती है और आदर्शनं लोपः का पाणिनि–सूत्र अन्त में भस्मकण छोडता है जिसे गंगा प्रवाहित कर आत्मसात् कर लेती है।

मैं प्रचेताग्नि से प्रार्थना करता हूँ कि जिस देह ने देश कालानुसार भारतवर्ष, राजस्थान, मेवाड़– भूमि को जो सेवाऐं प्रदान की हैं क्या प्रत्येक ज्वाला उसी ज्योति को उजागर कर रही है। अब तो वे वस्तुतः निरञ्जन आत्माओं के नाथ – सेवक हैं ईश्वरता कायम रहे।

देहं दाह्य तु निष्प्राणं, भस्मं गङ्गां प्रवाहयेत्।

सुधीः सुतै कृतं सर्वं धैर्यं धारयतां सदा।।

श्रद्धाञ्जलि, पुष्पाञ्जलि, जलांजलिर्जातम्।

सर्वं नाथ निरञ्जन तुभ्यम्, कस्मै समर्पयिष्येऽहम्।।

परमात्मन्योङ्कारे भक्तिः श्रद्धा समर्प्यतां सर्वे ।

तत्र निरञ्जन–लोके नाथोलीनस्तदेव – समुपास्यः।।